हुमायूँ की मस्जिद (1530 ई॰)

यह मस्जिद हुमायूँ के आदेश से उसके राज्याभिषेक के वर्ष (1530) में बनी। इसमें एक फ़ारसी शिलालेख है, जिसमें इस बात के साथ यह भी अभिलेखित है कि शेख़ ज़ैन ख़्वाफी ने अपने खर्चे से बनवाया था। वह कवि था और बाबर का एक महत्वपूर्ण सामन्त और उसका मित्र था। इस मस्जिद की संरचना मुगलों की धार्मिक आवश्कयता की पूर्ति-स्वरूप हुई जिन्होंने इस क्षेत्र में बाग लगाये थे और घर बनाकर यहाँ बस गये थे। अत: इस जगह को स्थानीय लोग 'काबुल' कहते थे। अपनी आत्मकथा में स्वयं बाबर ने यह बात लिखी है। यह एक पंचमुखी मस्जिद है जो पूर्णतया ईंट-चूने की बनी है। इसके ऊपर श्वेत प्लास्टर किया गया था। इसके मध्य में मुख्य कक्ष की मुखार पर एक भव्य ईवान बना है जो इतना ऊँचा है कि उसके पीछे गुम्बद छिप गया है, जैसा दिल्ली की मुहम्मद-बिन-तुग़लक की बेगमपुरी मस्जिद (ल. 1342 ई॰) और जौनपुर की शर्क़ी वंश की मस्जिदों (1376-1478 ई॰) में हुआ था। प्रत्येक पार्श्व में दो श्रृंखलाओं में दुहैरे कक्ष हैं अर्थात् दोनों ओर चार-चार कक्ष हैं, जिनके ऊपर अर्धवृत्ताकार लघु-गुम्बट है। अब दक्षिणी भाग गिर गया है। इसमें बाहर की ओर चीनी-टाइलों से अलंकरण किया गया था। इसमें पत्थर का काम नहीं है और स्पष्ट ही यह पूर्ववर्ती लोदी शैली में बनी है। हुमायूँ की ज्योतिष यन्त्रशाला भी इसके समीप ही नदी के किनारे बनी थी। अब यह खण्डहर हो गयी है और वहाँ केवल एक बड़ी बावड़ी और एक एकाश्म शिला रह गयी है, जिसमें 12 सीढ़ियाँ बनी हैं, अब इसे 'ग्यारह-सिड्डी' कहते हैं।